डॉ. मोनिका देवी

जन्म : कादरगढ़, जिला शामली (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण विद्यालय में, स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा मेरठ के चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास से एम.फिल. और उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद से हिन्दी साहित्य में पी-एच.डी.। हैदराबाद के ही प्रख्यात स्वायत्त निज़ाम कॉलेज से अनुवाद अध्ययन में डिप्लोमा।

प्रकाशित पुस्तकें-

अंतिम दशक की कहानियों में वैचारिक संघर्ष, अनुवाद के विविध आयाम, भगवतीशरण मिश्र के उपन्यास लक्ष्मण रेखा में समकालीनता बोध, समकालीन कहानियों में विविध विमर्श, समकालीन उपन्यासों में विविध विमर्श, 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' किन्नर जीवनी परक उपन्यास है जिस पर 5 पीएच.डी. और एक एम.फिल. शुरू हो गयी है, विभिन्न परिस्थितियों में जूझती नारी

साहित्यिक गतिविधियां-

- सदस्य सम्पादन मण्डल - बोहल शोध मंजूषा और आलेखन दृष्टि। सहसंपादक- अक्षरवार्ता (मासिक), शोध दर्पण (मासिक), हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय ई-पत्रिका, जापान।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध और सृजनात्मक पत्र पत्रिकाओं, समाचारपत्रों में निरंतर लेखन और भागीदारी। आकाशवाणी से काव्य पाठ और साक्षात्कार प्रसारण। हिन्दी के समकालीन युवा साहित्यकारों में पहचान।

सम्मान और पुरस्कार

- पी-एच.डी. उपाधि के उत्तमोत्तम शोध कार्य के लिए 'बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन' से शताब्दी सम्मान, साहित्य अकादमी संस्कृति परिषद, मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग-भोपाल, श्रीमती सरस्वती देवी सम्मान, काव्य रंगोली संस्था द्वारा साहित्य रंगोली सम्मान, निर्मला हिन्दी साहित्य रत्न सम्मान, राष्ट्रीय रत्न सम्मान, प्रतिभा रक्षा सम्मान समिति (करनाल, हरियाणा) से सम्मानित, प्रशंसा-पत्र (साहित्य संस्था, ब्रिटेन), शिल्पी चड्ढा स्मृति सम्मान (सविता चड्ढा जन सेवा समिति), विश्व साहित्य रथी सम्मान (कनाडा) आदि।

संप्रति : प्रिंसिपल, गुरुनानक कन्या इंटर कॉलेज, जलालाबाद शामली (उत्तर प्रदेश)
संपर्क : मोबाइल : 8074544946
ईमेल : monikadevi.2911@gmail.com

रुद्र प्रकाशन
प्रकाशक एवं वितरक
बाँदा, बुंदेलखण्ड (उ.प्र.)
Email : rudraprakashan94515@gmail.com
Mobile : 9451563815

ISBN 978-81-942215-2-4
9 788194 221524
₹ 480.00

बदलते परिवेश में ग्रामीण-जीवन मोनिका देवी

बदलते परिवेश में ग्रामीण-जीवन

बिजेन्द्र कुमार

संपादक
मोनिका देवी
सह-संपादक
अमित कुमार दूबे, सुनील चौधरी

ISBN : 978-81-942215-2-4

पुस्तक : बदलते परिवेश में ग्रामीण जीवन
संपादिका : मोनिका देवी
प्रकाशक : रुद्र प्रकाशन, बाँदा
मो. 9451563815
Email : rudraprakashan94515@gmail.com
संस्करण : 2020
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मूल्य : 480.00 (चार सौ अस्सी रुपये मात्र)
मुद्रण : पूजा ऑफसेट, कानपुर

Badlte Parivesh Me Grameen Jiwan
Edited : Monika Devi
Price : Four Hundred Eighty Only.

14. हिंदी फिल्मों से बदलता ग्रामीण जीवन
लेफ्ट डॉ.अनिता शिंदे
15. कोविड –19 अध्यापक शिक्षा व् शिक्षण संस्थानों की भूमिका
संदीप कुमार शर्मा
16. हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जनजीवन का चित्रण
डॉ लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा
17. बदलते परिवेश में ग्रामीण जीवन
डॉ. किरणबेन ओ. डोडीया
18. वर्तमान समय में परिवार का महत्व और उसका बदलता स्वरूप
जितेन्द्र एम. राठोड
19. हिंदी उपन्यासों में किसान विमर्श
श्री आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
20. ग्रामीण चेतना का दस्तावेज अग्निबीज
डॉ. सुलक्षणा जाधव–घुगरे
21. सागर की लहरों से नाता जोड़ते ग्राम–जन
डॉ. दयानिधि सा
22. डॉ. रमेश चन्द्र शाह के उपन्यासों में सामाजिक चुनौतियाँ
श्रीमती रश्मि मिश्रा (शोधार्थी)
डॉ. आशा अग्रवाल (निर्देशक)
23. ग्रामीण जीवन का स्याह यथार्थ : मैला आँचल
डॉ. मंजुला श्रीवास्तव
24. प्रवासी भाषा में हिन्दी का महत्व
डॉ. आंचल श्रीवास्तव
25. बदलते परिवेश में ग्रामीण जीवन में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की भूमिका
डॉ रमेश कुमार, डॉ संतोष कुमारी, डॉ. रविकांत
26. कोरोना काल में महिलाओं संबंधी मुद्दे
अमित कुमार दूबे
27. साक्षात्कार : बदलता ग्रामीण जीवन
गजेन्द्र सिंह
28. त्रिलोचन शास्त्री की कविताओं में अभिव्यक्त ग्रामीण लोक संवेदना
चंद्रकांत सिंह
29. हिंदी साहित्य में चित्रित मजदूरों एवं किसानों की स्थिति और आज
डॉ. बिजेंद्र कुमार

और नहीं जिया जाता
और कब तक चलेगी लड़ाई यह ?

इस तरह हम देखते हैं कि त्रिलोचन जी गाँव को विस्मृत नहीं करते, गाँव के संबधों को भी विस्मृत नहीं करते। एक लम्बे समय से शहर में रहने के साथ जो बौद्धिक जटिलता मन को घेर लेती है उसे ग्रामीण संवेदन से भीतर तक धो डालने का गंभीर जतन वे करते हैं। वे कहते थे– " भले ही साक्षर लोगों से संपर्क न हो वह संपर्क तो हानिकारक भी होता है–पर जो अक्षर विहीन हैं, असली जीवन जीते हैं उनका संपर्क जरूरी है। उन्हीं के जीवन पर कोई रचना नई बन सकती है।" उन्होंने संघर्ष करने वाले सुविधाहीन लोगों का निर्मल चरित्र अपनी कविता में खींचा है। उनकी कविता लोगों की वास्तविक कविता है, जिसमें श्रमजनित राग है, लोक का संस्पर्श है और नए समाज को गढ़ने–रचाने का बोध एवं भाव भी ...

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी)
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

30

हिंदी साहित्य में चित्रित मजदूरों एवं किसानों की स्थिति और आज

डॉ. बिजेंद्र कुमार

प्राचीन काल में भारतवर्ष को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारतवर्ष की समृद्धि एवं खुशहाली का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहां के भवन एवं मंदिर धन–संपदा के भंडार होते थे। इन्हीं मंदिरों को लूटने के लिए तुर्कों, मुगलों, अफगानों आदि ने अनेक बार आक्रमण किए और गुलाम बनाया। फिर अंग्रेजों ने इसे अपना गुलाम बनाया। इन सब विदेशियों ने मिलकर भारतवर्ष को लगभग एक हजार वर्षों तक लूटा। भारत की समृद्धि का कारण थी यहां की कृषि व्यवस्था एवं लघु–उद्योग–बंधे। जिस कारण यहाँ के गाँव समृद्ध और खुशहाल थे। आज भी भारत की 80% आबादी कृषि पर आधारित है तथा गांव में रहती है। अंग्रेजों, साहूकारों, सामंतों, महाजनों, पूंजीपतियों आदि के शोषण ने मजदूरों एवं किसानों को भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया था। 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत इन लोगों को उम्मीद थी कि सरकार इनके लिए कार्य करेगी तथा इनकी समृद्धि के दिन वापस आ जाएंगे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बड़े–बड़े उद्योग–धंधे स्थापित हुए और मजदूर उज्ज्वल भविष्य की तलाश में गांव से शहर में आ गए। लेकिन कोई कठोर श्रमिक कानून न होने के कारण इनका शोषण लगातार होता रहा और ऐसे ही किसानों को भी उनकी फसलों का पूरा मूल्य नहीं मिला। 2020 के प्रारम्भ में फैली नवल करोना महामारी ने इन मजदूरों एवं किसानों की स्थिति को और बदतर कर दिया। ये बिना रोजगार के भूखा मरने पर विवश हो गए और अपने गांव जाने के लिए मजबूर। आज इनकी स्थिति भया से भयावह हो गई है। इनकी जान इतनी सस्ती हो गई है कि यह सड़क–रेल आदि पर मरने के लिए विवश हैं। आज इनके जीवन को पुनः पटरी पर लाने की आवश्यकता है।

बीज वाक्य

हिंदी साहित्य, मजदूर–किसान, भूखमरी, रोजगार, नवल करोना, गाँव–शहर।